कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित )

क्रम संख्या....

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

## उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ..........

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ..........

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय Economics

परीक्षा का दिन Monday

दिनांक 19-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

### प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

| प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक | प्रश्नों की क्रम संख्या | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|
| 1 | | 19 | |
| 2 | | 20 | |
| 3 | | 21 | |
| 4 | | 22 | |
| 5 | | 23 | |
| 6 | | 24 | |
| 7 | | 25 | |
| 8 | | 26 | |
| 9 | | 27 | |
| 10 | | 28 | |
| 11 | | 29 | |
| 12 | | 30 | |
| 13 | | 31 | |
| 14 | | योग | |
| 15 | | प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off) | |
| 16 | | अंकों में | शब्दों में |
| 17 | | | |
| 18 | | | |

परीक्षक के हस्ताक्षर .................. संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया ... है / 165/2019

## परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षार्थी उत्तर

| क द्वारा त अंक | प्रश्न संख्या | |
|---|---|---|
| | | |

(1) अर्थशास्त्र की व्यष्टि अर्थशास्त्र मे हम व्यक्तिगत इकाई का अध्ययन करते है।

(2) उत्पादन संभावना वक्र :- से तात्पर्य एक देश मे उपलब्ध संसाधनो द्वारा दो वस्तुओ के संयोगो मे से किसी श्रेष्ठ का चुनाव कर उत्पादन करना है। इस वक्र के माध्यम से दर्शाना उत्पादन संभावना वक्र कहलाता है।

(3) अर्थव्यवस्था :- अर्थव्यवस्था से तात्पर्य किसी देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक ढांचे से है।

(4) लागत :- किसी वस्तु के उत्पादन को तैयार करने मे आने वाली खर्चा को लागत कहते है।

(5) उत्पादन :- किसी वस्तु या सेवा की उपयोगिता मे सृजन करना उत्पादन कहलाता है।

(6) बाजार :- बाजार से तात्पर्य उस जहाँ क्रेता व विक्रेता के मध्य पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक सम्बन्ध होते है। अन्य शब्दो मे जहाँ वस्तु का क्रय विक्रय किया जाता है वह बाजार कहलाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(7) दो मध्यवर्ती वस्तुएँ :-

i) कपड़ा बनाने के लिए 'कपास'
ii) ब्रेड बनाने के लिए ~~आटा~~ 'मैदा'

(8) वस्तु विनिमय प्रणाली :- वह प्रणाली जहाँ दो व्यक्ति स्वयं के द्वारा उत्पादित एक अतिरिक्त वस्तु का विनिमय करते हैं। वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाती है।

(9) राष्ट्रीय आय :- किसी देश मे उत्पादित वस्तु व सेवा व विदेशो मे निर्यात वस्तु व सेवा को उस देश की मुद्रा मे व्यक्त करना राष्ट्रीय आय कहलाती।

(10) लोकतांत्रिक व्यवस्था मे सरकार बजट 'संसद' के सम्मुख प्रस्तुत करती है।

(11) (1) उपयोगिता मापनीय है :- उपयोगिता को मापा जा सकता है। अतः उपयोगिता मापनीय है।

(2) उपभोक्ता विवेकशील है :- उपभोक्ता को अपनी पसंद व रुचि, फैशन की पूर्ण जानकारी होती है अतः उपभोक्ता विवेकशील होता है।

परीक्षार्थी उत्तर

(12) तटस्थता मानचित्र :- तटस्थता मानचित्र से तात्पर्य जहाँ उपभोक्ता को दो या दो से अधिक वस्तुओं के मध्य तटस्थता होता है। मानचित्र द्वारा निरूपण तटस्थता मानचित्र कहलाता है।

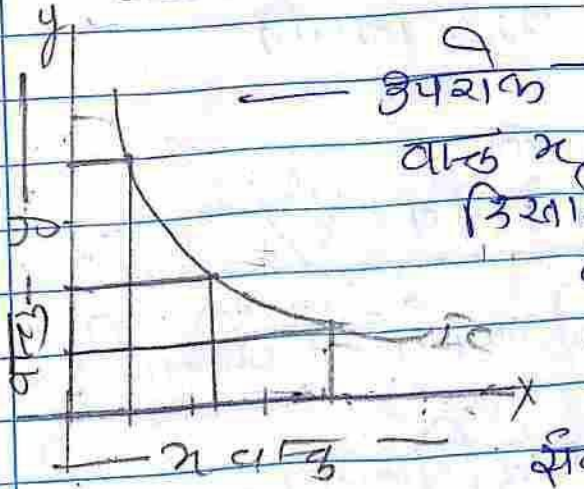



— उपरोक्त चित्रानुसार x-अक्ष पर वस्तु x व y-अक्ष पर वस्तु दिखाई गई है जिन दोनों वस्तु के मध्य उपभोक्ता तटस्थ है क्योंकि ये दोनों वस्तुएँ उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करती है।

~~(13) एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता की विशेषता :-~~

(13) एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता :- से तात्पर्य बाजार की उस अवस्था से है, जहाँ वस्तु के क्रेता व विक्रेताओं की संख्या बहुत कम होती है, जहाँ वस्तु विभेद पाया जाता है।

(14) सकल घरेलू उत्पाद :- (GDP) से तात्पर्य एक देश की भौगोलिक सीमा में उस देश के व अन्य देश के व्यक्तियों द्वारा उत्पादित वस्तु व सेवाओं से प्राप्त आय को राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है इसे GDP सकल घरेलू उत्पाद कहते है।

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

$GDP_{MP} = C + I + G + X - M$.

C = उपभोग व्यय
I = निवेश व्यय
G = सरकारी व्यय
X-M = शुद्ध निर्यात

जहाँ M = आयात
व X = निर्यात है।

(15) **राष्ट्रीय आय की गणना की कठिनाई :-**

i) **मुद्रा के बदले वस्तु विनिमय :-** यदि कोई व्यक्ति मुद्रा के बदले वस्तु विनिमय करता है तो इसे राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता है।

ii) **स्वयं अवकाश ग्रहण करने पर :-**

यदि कोई व्यक्ति अवकाश ग्रहण करता है तो उसकी आय को राष्ट्रीय आय में शामिल करने में कठिनाई होती है।

(16) **समग्र मांग :-** किसी एक देश में सरकार व समस्त उपभोक्ता, व विदेशी के द्वारा वस्तु व सेवा की मांग को समग्र मांग कहते है।

परीक्षार्थी उत्तर

(17) घाटे का बजट :- किसी देश में यदि समस्त व्यय समस्त आय से अधिक होते है तो इसे घाटे का बजट कहते है।

कुल आय < कुल व्यय

(18) - नकद विहीन लेनदेन के माध्यम :-

i) चैक या ड्राफ्ट ii) ई-वॉलेट।

(19) तटस्थता वक्र :- से तात्पर्य जहाँ उपभोक्ता दो या दो से अधिक वस्तुओं के मध्य तटस्थत होता है जो उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करते है।

- तटस्थता वक्र की विशेषता :-

i) तटस्थता वक्र एक दूसरे को नही काटते :-

तटस्थता वक्र कभी भी एक दूसरे को नही काटते है। व सदैव एक समानान्तर रेखा में चलते है। अगर वे एक दूसरे को काटेंगे तो संतुष्टि के स्तर को प्राप्त नही किया जा सकता है।

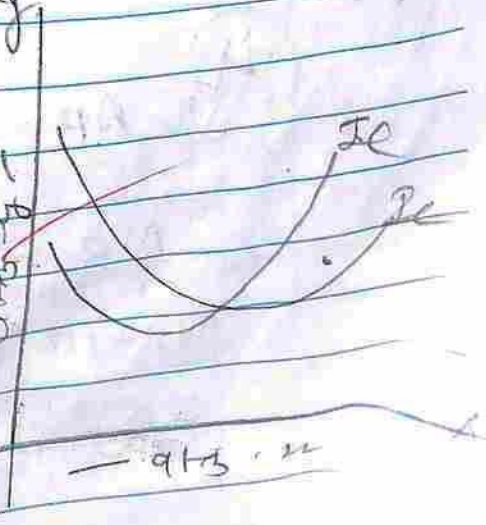

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

([illegible]) तटस्थता वक्र मूल बिंदु से उन्नतोदर होते हैं:-




तटस्थता वक्र सीमांत प्रतिस्थापन उपभोग प्रवृत्ति के कारण मूल बिंदु से उन्नतोदर होते हैं क्योंकि प्रतिस्थापन सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में एक वस्तु के उपभोग को स्थान पर अन्य वस्तु के उपभोग में कमी करनी पड़ती है जिससे तटस्थता वक्र मूल बिंदु से उन्नतोदर हो जाते हैं।

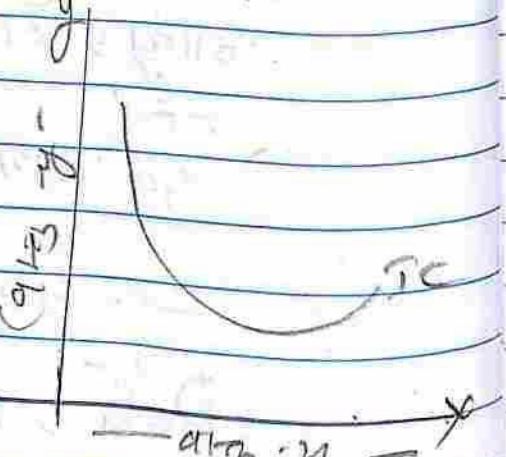

(20)

| कुल बिक्री | कुल आगम | औसत आगम (AR) | सीमांत आगम (MR) |
|---|---|---|---|
| 1 | 20 | 20 | |
| | | | 0 |
| 2 | 36 | 18 | 16 |
| 3 | 48 | 16 | 12 |
| 4 | 56 | 14 | 8 |

$AR = \frac{TR}{Q}$

$MR = TR_n - TR_{n-1}$ or $\frac{\Delta TR}{\Delta Q}$

औसत आगम :- कुल आगम से कुल बिक्री का भाग देकर औसत आगम (AR) ज्ञात किया जाता है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

सीमांत आगम :- एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन से जो अतिरिक्त आगम प्राप्त होती है उसे सीमांत आगम (MR) कहते है।

$MR = \frac{\Delta TR}{\Delta Q}$ or $TR_n - TR_{n-1}$

(21) पूर्ण प्रतियोगिता बाजार :- बाजार की वह अवस्था जहाँ क्रेताओ व विक्रेताओ के मध्य पूर्ण - प्रतिस्पर्धात्मक सम्बन्ध होते है। जहां क्रेता व विक्रेताओ की अत्यधिक संख्या होती है। जहा क्रेता व विक्रेताओ को बाजार की पूर्ण जानकारी होती है। पूर्ण प्रतियोगिता बाजार कहलाता है।

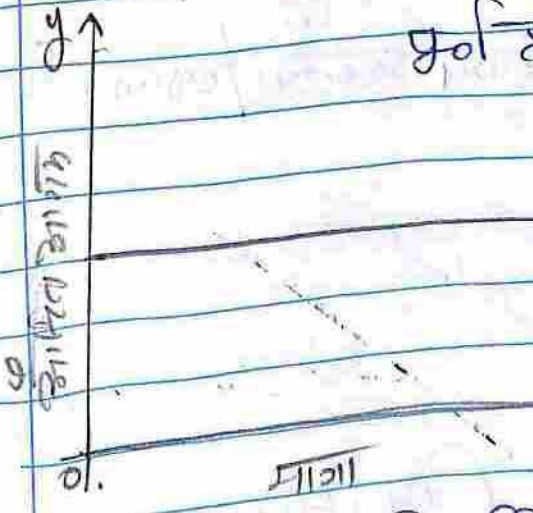




पूर्ण प्रतियोगिता बाजार मे फर्म का औसत आगम वक्र क्षैतिज होता है क्योंकि इसमे यह सामान्य की अवस्था होती है हम उत्पादन को घटा या बढ़ा नही सकते कीमत उद्योग द्वारा निर्धारित की जाती है।

(32)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(22) बाजार संतुलन:- बाजार संतुलन बाजार माँग व बाजार पूर्ति की शक्तियों पर निर्धारित होती है जहाँ बाजार बाजार माँग व बाजार पूर्ति बराबर होती है वह स्थिति बाजार संतुलन कहलाती है।

तालिका:-

| कीमत | माँग | पूर्ति |
|---|---|---|
| 1 | 5 | 1 |
| 2 | 4 | 2 |
| 3 | 3 | 3 |
| 4 | 2 | 4 |

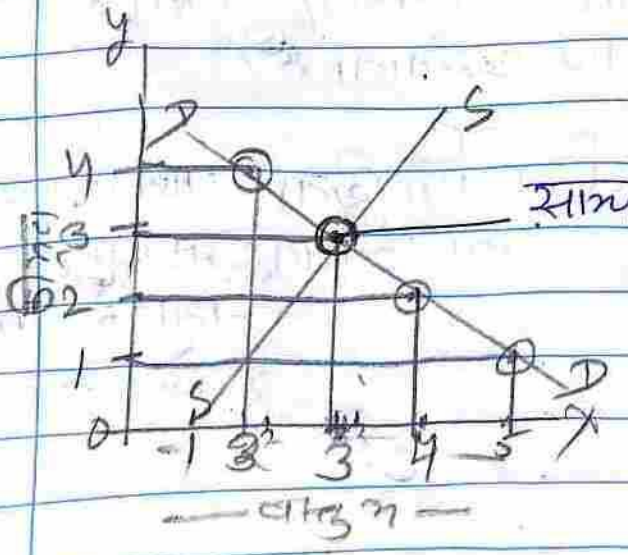




व्याख्या:- उपरोक्त चित्रानुसार x-अक्ष पर वस्तु x को दर्शायी गई है व y-अक्ष पर वस्तु की कीमत दिखाई है।

- कीमत बढ़ने पर माँग घटती है व पूर्ति बढ़ती है

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

- जब वस्तु की कीमत 3 रु. है तो उस वस्तु की माँग भी 3 है व पूर्ति भी 3 है।

- अतः यह साम्य की अवस्था है। जहाँ उत्पादक 3 रु. कीमत पर वस्तु को उत्पादित करने व उपभोक्ता खरीदने के लिए तत्पर रहता है। इसे साम्य अवस्था या बाजार संतुलन कहते है।

---

(23). राष्ट्रीय आय की विशेषता :-

i) दो देशों की तुलना करने में :- किसी देश की राष्ट्रीय आय द्वारा हम दो देशों में आर्थिक विकास की तुलना कर सकते है।

ii) आर्थिक विकास का सूचक :- राष्ट्रीय आय के माध्यम से हम यह पता कर सकते है कि कौन देश कितनी तरक्की कर रहा है। राष्ट्रीय आय से देश की आर्थिक स्थिति का पता लगाया जाता है।

iii) राष्ट्रीय आय का अनुमान :- राष्ट्रीय आय के द्वारा हम किसी भी देश की राष्ट्रीय आय का अनुमान लगा सकते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(26) MPC = 0.8

$K = \frac{1}{1 - MPC}$

अतः $\frac{1}{1-0.8} = \frac{1}{0.2} = \frac{10}{2} = 5$

अतः गुणक का मूल्य = 5 उत्तर

(27) बजट :- एक ऐसा विवरण पत्र होता है जिसमें किसी देश के आय-व्यय का ब्योरा होता है इसे संसद के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है।

- बजट के चार उद्देश्य :-

i) देश की दशा व दिशा का निर्धारण :-

बजट के माध्यम से किसी भी देश की दशा व दिशा का निर्धारण किया जाता है जिसमे किसी देश में किस चीज पर कितना व्यय किया जाना चाहिए पता चलता है।

ii) आर्थिक विकास का मापक :- बजट के माध्यम से किसी देश का आर्थिक विकास किया जाता है।

| अंक द्वारा | प्रश्न संख्या |
|---|---|

iii) **देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण :-** बजट किसी देश की आय व व्यय का ब्योरा होता है जिसके माध्यम से देश में विकास के लिए क्या करना चाहिए की जानकारी निहित होती है।

iv) **हर वर्ग को लाभ :-** बजट का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य हर वर्ग को लाभ देना है जिसमें गरीब, मध्यम, युवा सभी के विकास के लिए किए जाने वाले व्ययों का लेखा होता है।

(24) **मांग की कीमत लोच :-** मांग की कीमत लोच से तात्पर्य कीमत व मांग मात्रा के मध्य संबंध से है जिसमें उपभोक्ता द्वारा मांगी जाने वाली मात्रा के कीमत के साथ संबंध को दर्शाया जाता है।

कीमत लोच की श्रेणियां

- पूर्णतया लोचदार ($ed = \infty$)
- पूर्णतया बेलोचदार ($ed = 0$)
- इकाई के बराबर ($ed = 1$)
- इकाई से कम ($ed < 1$)
- इकाई से अधिक ($ed > 1$)

1) **पूर्णतया लोचदार ($ed = \infty$) :-** वह मांग लोच जहाँ कीमत पूर्णतया स्थिर होता रहती है परंतु मांग में सदैव परिवर्तन

रहता है। यह परिवर्तन ~~प्रतिस्थापन प्रभाव~~ रुचि, फैशन के कारण होता है क्योंकि यदि उपभोक्ता की रुचि मे परिवर्तन होता है तो वह कीमत मे परिवर्तन न होने पर भी मांग मे परिवर्तन कर देता है।




व्याख्या :- उपरोक्त चित्रानुसार x-अक्ष पर वस्तु की मांग व y-अक्ष पर कीमत दर्शायी गई है।

- यदि वस्तु की कीमत P. है तो उसकी मांग Q है।

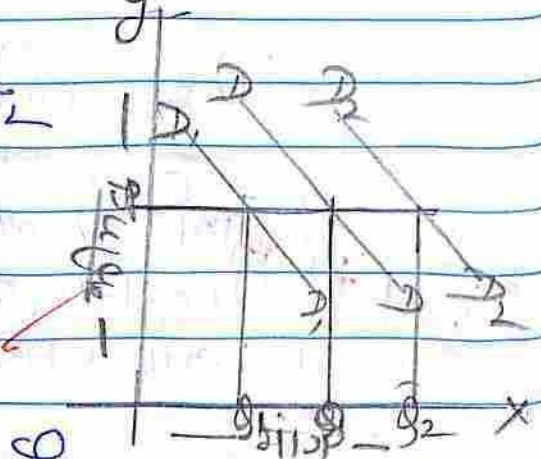

- यदि वस्तु की कीमत मे कोई परिवर्तन नही होता तो भी वस्तु की मांग Q से बढ़कर $Q_1$ हो जाती है।

- पुनः वस्तु की कीमत P. ही रहती है, कोई परिवर्तन यथा वृद्धि व कमी नही होती है फिर भी वस्तु की मांग $Q_1$ से बढ़कर $Q_2$ हो जाती है।

- यह परिवर्तन उपभोक्ता की रुचि, बदलते फैशन के कारण विलासिता की वस्तुओं या गिफ्फीन वस्तुओं के कारण हो सकता है।

परीक्षार्थी उत्तर

(ii) पूर्णतया बेलोचदार (ed = 0) :- वह मांग वक्र जहां कीमत मे आनुपातिक परिवर्तन मांग मे कोई परिवर्तन नही होता है मांग पूर्णतया स्थिर रहती है यह परिवर्तन दैनिक आवश्यकताओ की वस्तुए यथा दवाई, अनाज आदि के कारण होता है यदि दवाई की कीमत मे वृद्धि हो रही है फिर भी उपभोक्ता उसका उपभोग करेगा। अतः मांग वक्र पूर्णतया बेलोचदार रहता है।




व्याख्या :- उपरोक्त चित्रानुसार x-अक्ष पर वस्तु की मांग व y-अक्ष पर कीमत दर्शायी गई है।

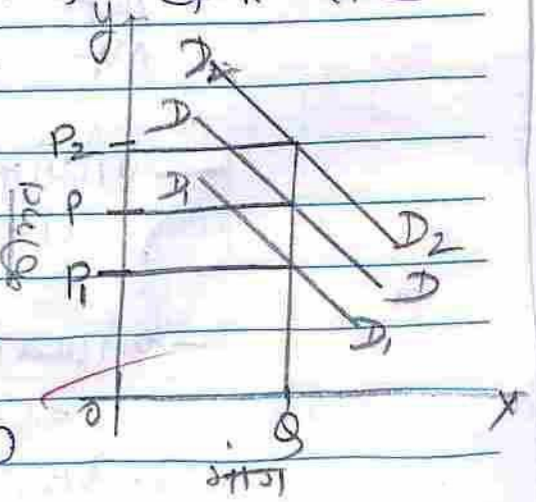

- जब वस्तु की कीमत P है तो उसकी मांग Q है।

- वस्तु की कीमत जब P से बढ़कर P₂ हो जाती है तो उसकी मांग मे कोई परिवर्तन नही होता व कीमत घटकर P₁ से P₁ हो जाती है तभी भी मांग मे कोई परिवर्तन नही होता है इसे पूर्णतया बेलोचदार मांग वक्र कहते है।

मांग मे कोई भी परिवर्तन नही होने का कारण दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं यथा: दवाई व अनाज है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(Q4) — सीमांत आगम व सीमांत लागत विधि द्वारा फर्म का संतुलन :-

सीमांत आगम व सीमांत लागत विधि में फर्म के संतुलन की दो शर्तें है:-

i) MR = MC. कुल आगम व कुल लागत सदैव बराबर रहने चाहिए।

ii) MC वक्र MR को नीचे से काटना चाहिए।

— सीमांत आगम व सीमांत लागत की पहली शर्त MR = MC




— व्याख्या :- उपरोक्त चित्रानुसार x-अक्ष पर मात्रा व y-अक्ष पर MR व MC दर्शाया गया है।

— कि जब MR घटती है तो MC भी उसके साथ घटती है

— बिंदु E पर MC MR को काटती है, अतः बिंदु E पर MR = MC बराबर होते है यहां सीमांत आगम व सीमांत लागत की पहली शर्त पूरी हो जाती है।

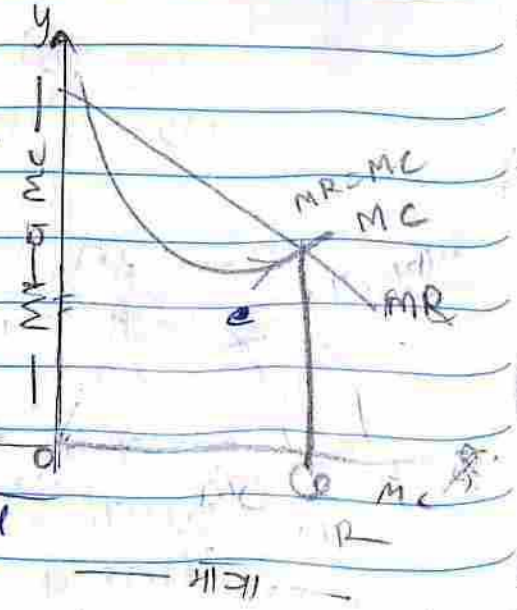

परीक्षार्थी उत्तर

| द्वारा अंक | प्रश्न संख्या |
| --- | --- |

- सीमांत आगम व सीमांत लागत द्वारा फर्म संतुलन की दूसरी शर्त MR वक्र MC को नीचे से काटे।–




व्याख्या:– उपरोक्त चित्रानुसार ox-अक्ष पर मात्रा/उत्पत्ति व oy अक्ष पर MR/MC दर्शाया गया है।

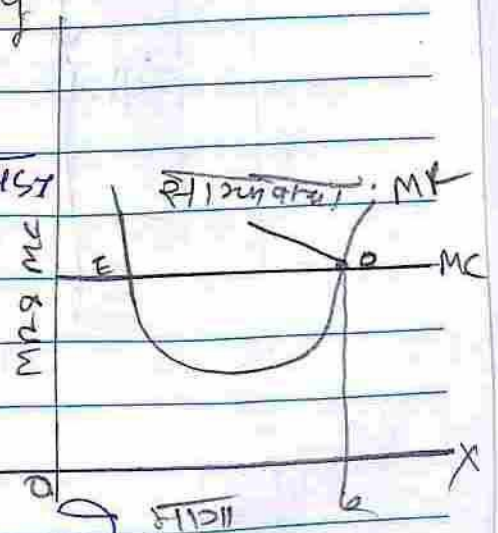

- जब MC अर्थात सीमांत लागत पूर्णतया स्थिर है तो सीमांत आगम वक्र उसे नीचे से काटता है।

- वह MR वक्र MC को जहां काटता है व Q बिंदु है यहां पर फर्म का संतुलन होता है इसे संतुलित बिंदु कहते हैं।
यहां फर्म के संतुलन की दूसरी शर्त भी पूरी हो जाती है।

(30) मात्रात्मक उपाय:– वे उपाय जो साख की मात्रा को नियंत्रित करने के लिए किये जाते हैं इसमें साख की मात्रा पर ध्यान दिया जाता है इस बात पर नहीं की साख किस उद्देश्य के लिए उपलब्ध करवायी जा रही है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

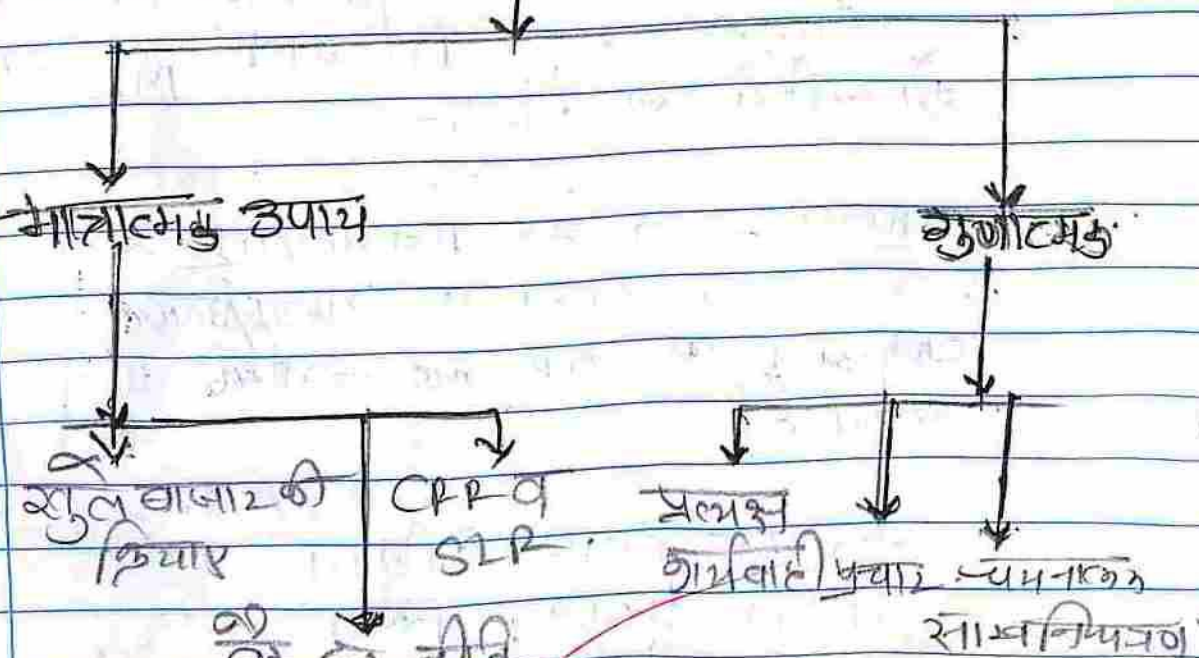




1) <u>खुले बाजार की क्रियाये</u> :- केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रण के मात्रात्मक उपाय में खुले बाजार की क्रियाए की जाती है जिसमे केन्द्रीय बैंक व्यापारिक बैंको को सरकारी प्रतिभूति क्रय करने का आदेश देती है। मुद्रा स्फीति के समय बैंक इन्हे खरीदने का आदेश देती है व मुद्रा अवस्फीति के समय बैंक इनसे वे प्रतिभूतियां खरीद लेती है ताकि साख की मांग का विस्तार किया जा सके।

परीक्षार्थी उत्तर

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या

ii) बैंक दर नीति :- वह नीति जिसमे केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंको को जिस दर से ऋण उपलब्ध करवाती है इसमे मुद्रास्फीति के समय बैंक व्यापारिक बैंको को दिये जाने वाले ऋण पर ब्याज अधिक कर देती है जिससे व्यापारिक बैंक अपना आधिक पैसा रिजर्व बैंक के पास रखे व ग्राहको की क्रय शक्ति कम की जा सके। व मुद्रा अवस्फीती के समय बैंक उन्हे कम ऋण प्रदान करती है ताकि जनता की क्रय शक्ति को बढाया जा सके।

iii) CRR नकद कोषानुपात :- नकद कोषानुपात वह कोष होता है जिसमे रिजर्व बैंक व्यापारिक बैंको से अपनी जमाओं का निश्चित अनुपात नकद के रूप मे रिजर्व बैंक के पास रखने के लिए आदेशित करता है। मुद्रास्फीति के समय रिजर्व बैंक नकद कोषानुपात मे वृद्धि कर देता है व मुद्रा अवस्फीति के समय नकद कोषानुपात मे कमी कर दी जाती है जिससे जनता की क्रय शक्ति बढा दी जा सके।

iv) SLR तरल कोषानुपात :- वह अनुपात जिसमे केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंको को अपनी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

जमाओं का एक निश्चित अनुपात स्वयं के कोष में नकद व किसी अन्य रूप में रखने के लिए कहते हैं। मुद्रास्फीति के समय इसके प्रतिशत में परिवर्तन कर बढ़ा दिया जाता है। जिससे बैंकों के पास कोष अधिक जमा हो सके व जनता की क्रय शक्ति कम की जा सके व मुद्रा अवस्फीति के समय इसके प्रतिशत में कमी कर जनता की क्रय शक्ति को बढ़ाया जाता है।

इस प्रकार रिजर्व बैंक द्वारा देश में साख का नियंत्रण करने के मात्रात्मक उपाय के रूप में निम्न उपाय अपनाये जाते हैं।

समाप्त

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

USER 165701N

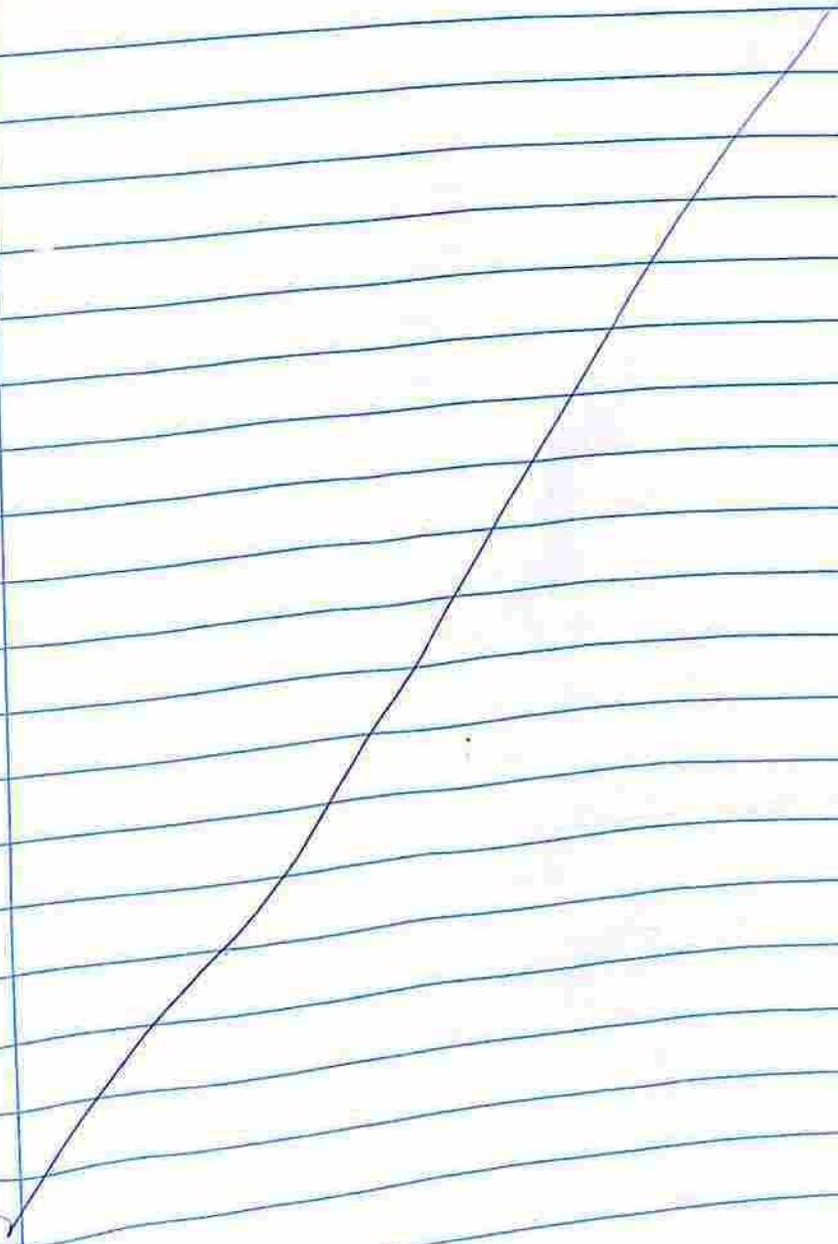

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
|---|---|---|

BSER-165/2019

| परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर |
| --- | --- | --- |

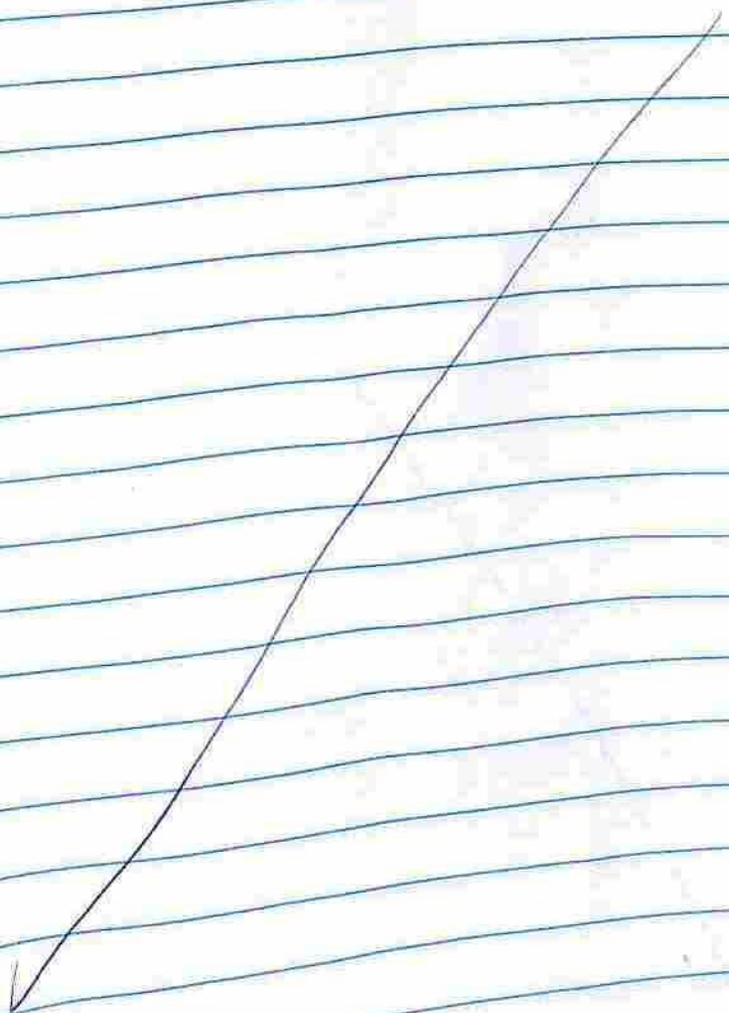

BSER 165/2019